

१२/१०
१५

हउ वनी येउा सुकु (धर्मो व उक्तो कार्त्तिकेण
उपलब्धो भवे। वाच-२ आवाज न्याइ उरु।
नाइ उपलब्धो भवे। धर्मो व उक्तो कार्त्तिकेण
को अनुपलब्धि से प्रयोग का अर्थ सचचीन
अर्थ ही से समझ लिया जाता है। कथना
द्वारा सुगम होकर उक्त से का सो अर्थ
सकरीत होकर वाच है।

